

जनराज्ञश्चित्रांगदस्य च ॥ २ ॥ श्रीमद्राजपुरं नाम नगरं तत्र भारत ॥ राजानः शतशस्तत्र कन्यार्थे समुपागमन् ॥ ३ ॥ श्रुत्वा दुर्योधनस्तत्र समेतान् सर्वपार्थिवान् ॥ रथेन कांचनांगेन कर्णेन सहितो ययौ ॥ ४ ॥ ततः स्वयंवरे तस्मिन्संप्रवृत्ते महोत्सवे ॥ समाजगमुर्नृपसत्तम ॥ ५ ॥ शिशुपालो जरासंधो भीष्मको वक्रएव च ॥ कपोतरोमानीलश्चरुक्मीचदृढविक्रमः ॥ ६ ॥ स्तगालश्च महाराजः स्त्रीराज्याधिपतिश्च यः ॥ अशोकः शतधन्वा च भोजो वीरश्च नामतः ॥ ७ ॥ एते चान्ये च बहवो दक्षिणां दिशमाश्रिताः ॥ म्लेच्छाचार्याश्च राजानः प्राच्यो दीव्यास्तथैव च ॥ ८ ॥ कांचनांगदिनः सर्वेशुद्धजांबूनदप्रभाः ॥ सर्वे भास्वरे देहाश्च व्याघ्रा इव बलोल्लटाः ॥ ९ ॥ ततः समुपविष्टेषु ते पुराजसु भारत ॥ विवेश रंगं सा कन्या धात्री वर्षवरा न्विता ॥ १० ॥ ततः संश्राव्यमाणे षुराज्ञानामसु भारत ॥ अत्यक्रामद्दार्तराष्ट्रं सा कन्या वरवर्णिनी ॥ ११ ॥ दुर्योधनस्तु कौरव्यो नाम र्षयतलं घनं ॥ प्रत्यपेधच्च तां कन्यामसत्कृत्य नराधिपान् ॥ १२ ॥ सर्वार्थमदमत्तत्वाद्भीष्मद्रोणावुपाश्रितः ॥ रथमारोप्य तां कन्यामाजहार नराधिपः ॥ १३ ॥ तमन्वगाद्रथी खड्गो धांगुलित्रवान् ॥ कर्णः शस्त्रभृतां श्रेष्ठः पृष्ठतः पुरुषर्षभ ॥ १४ ॥ ततो विमर्दः सुमहान् राज्ञा मासीद्युत्सतां ॥ सन्नत्यतां तनुत्राणि रथान्योजयतामपि ॥ १५ ॥ तेभ्य धावंत संक्रुद्धाः कर्णदुर्योधनावुभौ ॥ शरवर्षाणि मुंचंतो मेघाः पर्वतयोरिव ॥ १६ ॥ कर्णस्तेषामापततामैकैकं नशरेण ह ॥ धनूंषि च शरव्रातान्यातयामास भूतले ॥ १७ ॥ ततो विधनुषः कांश्चि ल्कांश्चिदुघतकामुकान् ॥ कांश्चि चोद्धहतो बाणान् रथशक्तिगदास्तथा ॥ १८ ॥ लाघवाद्भ्याकुलीकृत्य कर्णः प्रहरतां वरः ॥ हतसूतांश्च भूयिष्ठानवजिग्ये नराधिपान् ॥ १९ ॥ ते स्वयं वाहयंतो श्वान् पाहिपाहीति वा दिनः ॥ व्यपेयुस्ते रणं हित्वा राजानो भग्नमानसाः ॥ २० ॥ दुर्योधनस्तु कर्णेन पाल्यमानोभ्ययात्तदा ॥ तदृष्टः कन्यामुपादाय नगरं नागसाङ्क्यं ॥ २१ ॥ इति श्रीम० शांति० राजधर्मानुशासनप० दुर्योधनस्य स्वयंवरे कन्याहरणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारद उवाच ॥ आविष्कृतवलं कर्णं श्रुत्वा राजा समागधः ॥ आकूयैद्वैरथेन जौजरासंधो महोपतिः ॥ १ ॥ तयोः समभवद्बुद्धिं दिव्यास्त्रविदुषोर्द्वयोः ॥ युधिनाना प्रहरणैरन्योन्यमभिवर्षतोः ॥ २ ॥

व्यपगताः ॥ २० ॥ २१ ॥ इति शांतिप० रा० नैलकंठे ये भारतभावदीपे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥